चिरन्तनाचार्य

जीवन-परिचय : चिरन्तनाचार्य का उल्लेख जयधवला टीका में प्राप्त होता है। इसमें बताया है कि चिरन्तनाचार्य का व्याख्यान प्रथम पृथ्वी के समान है अर्थात् मूलभूत कार्य है।

चिरन्तनाचार्य के लिए एक अन्य उल्लेख प्राप्त होता है, जिसमें उन्हें 'चिरन्तन व्याख्यानाचार्य' कहा गया है।

चिरन्तनाचार्य का समय आचार्य यतिवृषभ और आचार्य वप्पदेव के पूर्व का माना जाता है। सम्भवत: इनका समय द्वितीय शताब्दी रहा हो।

रचना-परिचय : आचार्य द्वारा रचित किसी भी ग्रन्थ का उल्लेख आगम में नहीं मिलता है।